# सँजोने हेतु आशीर्वाद

*~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द*

*"मन्दिर में रहो" सत्संग*

*शनिवार, ४ जुलाई, २०२०*

शुभ गुरुपूर्णिमा समर्पित है,
सम्मान करने के लिए
गुरु-शिष्य सम्बन्ध का,
जिसमें गुरु निर्देश देते हैं और शिष्य सीखता है,
गुरु मार्ग दिखाते हैं और शिष्य अनुसरण करता है,
गुरु शक्तिपात प्रदान करते हैं और शिष्य का रूपान्तरण हो जाता है,
गुरु बोलते हैं और शिष्य सुनता है,
गुरु आज्ञा देते हैं परम सत्य के साथ एक हो जाने की
और शिष्य इस अलौकिक स्थिति को प्राप्त करने का हर सम्भव प्रयत्न करता है।

शिष्यों के समक्ष हमेशा यह स्पष्ट नहीं होता
कि वे क्यों खोजते हैं,
वे क्यों गुरु को ढूँढ़ने की आकांक्षा रखते हैं,
वे क्यों एक आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करते हैं,
वे क्यों और कैसे संयोगवश एक महान आत्मा से मिलते हैं।
परन्तु एक बात स्पष्ट है :
उनकी खोज यह प्रमाणित करती है कि अपने हृदय की गहराइयों में
वे भगवान को जानने की,
भगवान को पाने की,
उसमें विलय हो जाने की महत्त्वाकांक्षा को सँजोए रखते हैं
जो सर्वाधिक दिव्य है और उस सबसे परे है जो जीवन की
चैतन्यशक्ति का दमन करता है।

इस ब्रह्माण्ड में हर किसी पर और हर वस्तु पर
ग्रह एवं नक्षत्रों का
स्वयं अपना गुरुत्वाकर्षी प्रभाव हो सकता है।
संस्कृत और हिन्दी भाषाओं में
इस प्रभाव को 'गुरुत्वाकर्षण' कहते हैं।

क्या इसमें कोई विस्मय की बात है कि इस संयुक्त शब्द में,
ये दो शब्द निहित हैं—
'गुरु' और 'आकर्षण?'
गुरु का अर्थ है 'महान' और आकर्षण का अर्थ है 'खिंचाव।'
गुरुत्वाकर्षण के खिंचाव द्वारा,
खगोलीय ग्रह-नक्षत्र ऊपर आकाश में निलम्बित रहते हैं!
उसी प्रकार, आध्यात्मिक मार्ग पर गुरु-शिष्य सम्बन्ध में
एक चुम्बकीय सन्तुलन होता है।
यह एक ऐसा सन्तुलन है जिसे साधना की शक्ति से गढ़ा जाता है।

साधना एक शिष्य के जीवन की विश्वसनीय पृष्ठभूमि है
और सर्वाधिक सच्ची अग्रभूमि है।
साधना शिष्य की निष्ठावान साथी है।
यही शिष्य को सुरक्षित रखती है और उसे डूबने से बचाती है,
चाहे सूर्य व चन्द्रमा का तेजस्वी प्रकाश बरस रहा हो
या इन आकाशीय पिण्डों पर ग्रहण लगा हो।
गुरु का प्रकाश सदा-सर्वदा जगमगाता रहता है।

जबसे यह पृथ्वी ग्रह प्रकट हुआ है,
एक ही नहीं, अनेक रूपों में,
अनगिनत आपदाओं का पिटारा खुलता रहता है।
इस विषय पर बहुत-सी कहानियाँ लिखी गई हैं,
अनेक महाकाव्य रचे गए हैं।
इसी कारण, श्रीगुरु का मृदुल हाथ,
जो शिष्यों को इस दलदल से बाहर निकलने का रास्ता दिखाता है,

जटिल भवसागर में
सदा के लिए उनकी जीवनरेखा बना रहेगा।

आयुर्वेद में रोगों के लिए प्रभावकारी औषधियाँ हैं।
परन्तु केवल श्रीगुरु की कृपा ही शिष्यों को भवरोग से बचा सकती है।
भवरोग एक ऐसा विषय है जिसकी छानबीन जीवन-पर्यन्त की जाती है
और जिस पर श्रीगुरु की करुणा से ही विजय प्राप्त की जाती है।

श्रीगुरु की सिखावनी शिष्यों को दिशा देती है जिससे वे
चन्द्रमा की विभिन्न कलाओं के परे जाएँ,
चन्द्रमा की परिवर्तनशील प्रवृत्ति से ऊपर उठें
और सभी बाह्य तत्त्वों को तिलांजलि देकर
व श्वास की शक्ति का उपयोग कर, अपने भटकते हुए मन को
जो महत्त्वपूर्ण है उसके सार तक ले जाकर,
अपने अवधान को विषय के मूल पर केन्द्रित करें।
चाहे सूर्य तेजस्विता से जगमगा रहा हो
या तूफ़ान प्रचण्डता से घुमड़ रहा हो,
श्रीगुरु की सिखावनी शिष्य की साधना को सम्बल देती है।

श्रीगुरु का प्रज्ञान शिष्यों के समक्ष यह स्पष्ट करता है
कि वे मायाजगत को सपना समझकर भूल नहीं सकते,
चाहने मात्र से वे अपने जीवन की पीड़ा और अपने कष्टों से छुटकारा नहीं पा सकते,
सोचने मात्र से वे अपने मन के अन्धकार को दूर नहीं भगा सकते,
या वे रणनीतियों की रचना कर
अपनी क्षुद्रता को हटाकर उसकी जगह अपनी महानता को नहीं बिठा सकते।
अपने हर श्वास,
हर क़दम के साथ,
हर पल में,
निरन्तर प्रयत्न करते रहना
सर्वोपरि है।

शिष्यों के प्रति गुरु का चिरस्थायी प्रेम
उन्हें मुक्त कर देता है
जो खोया है उससे जुड़ी असान्त्वनीय भावनाओं से,
लौकिक सुखों की तृष्णा
और अलौकिक प्राप्तियों की चाह के बीच
फँसे रहने की उलझन से,
दूसरों की उपलब्धियों को
मलिन करने की निरंकुश इच्छा से,
और स्वयं अपनी साधुता का विनाश करने से।
गुरुप्रेम जीवन जीने के उनके तरीक़े में सुधार करता है
जिससे विजय की प्राप्ति हो—बुराई पर अच्छाई की विजय।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध की शक्ति ऐसी होती है
कि, शिष्यों के सक्रिय मन को भनक भी नहीं लगती
और उनका हृदय जिसने शान्ति को पा लिया है,
एक पावन मन्दिर को खोज लेता है
जिसमें अनाहत नाद को सुना जा सकता है।
यह उनके हृदय और सत्ता के गर्भगृह में तरंगित होता हुआ
उनकी व्याकुलता और
जन्म-जन्मान्तरों की उनकी बेचैनी को शान्त करता है।

उन श्रीगुरु की जय-जयकार जो कृपा की वर्षा सदैव करते हैं, जब संसार में शान्ति होती है
और जब वह उलटा-पुलटा होता है,
जब संसार के वासी हर्षातिरेक में जी रहे होते हैं
और जब वे विषाद के गर्त में डूबे होते हैं।

आज 'गुरु ॐ' मन्त्र का जप करते हुए
तुम्हें शुभ गुरुपूर्णिमा के अमृतमय आनन्द की अनुभूति हो।

तुम्हें यह ज्ञात हो कि अभ्यासों के प्रति तुम्हारा अचल प्रेम
तुम्हारे मन का, हृदय का और तुम्हारी आत्मा का उत्थान करेगा।

आनन्द हो या आपदा, दोनों के सम्मुख तुम हमेशा अविचलित रहो।

आज और हर दिन अपने जीवन की नई शुरुआत करने के लिए
तुम प्रभु-प्रेम को अपने हर श्वास में भर लो।

तुम अपनी साधना में आगे बढ़ने के लिए कृतसंकल्प रहो,
तुम अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जाओं को सुदृढ़ करो,
अभ्यासों के प्रति अपनी वचनबद्धता में अचल रहो,
और अपनी महान आत्मा के लिए तुमने
जिस लक्ष्य की भी कल्पना की है, उसके पर्वत-शिखर
तक पहुँचने की अपनी इच्छा में अटल रहो।

सब अच्छा है।
तथापि, तुम इस सब को *महान* बना सकते हो,
अपने हर उस संकल्प से जो तुम निर्धारित करते हो,
अपने हर उस शब्द से जो तुम बोलते हो,
अपने हर उस कर्म से जो तुम करते हो।

*प्रभु का यशगान करो,* हमने यह सीखा है।
*गुरु की महिमा गाओ,* हमें यह सिखाया गया है।
*भगवान महान हैं,* हमने यह सुना है।
*गुरु प्रकाश हैं,* हम यह देखने-समझने लगे हैं।
परन्तु इस सबका क्या मतलब है यदि लोग अज्ञानतावश वह करते रहते हैं
जिससे मानवता और इस पृथ्वी ग्रह पर जो भी है उसके प्रति
अनादर और तिरस्कार को खुली छूट मिल जाए?

इसलिए, मैं तुम्हारे सामने यह बात रखना चाहती हूँ :
अपने विचारों और कर्मों को इस स्तर तक ऊँचा उठाओ
कि तुम अपने प्रति असीमित गर्व महसूस कर सको।

जब श्रीगुरु की कृपा तुम पर बरसती है,

तुम्हारी सत्ता झिलमिलाते दिव्य प्रकाश से आलोकित हो उठती है।

तुम्हारी निष्कलंक सत्ता से केवल प्रकाश ही प्रसरित होता है।

ध्यानं सत्यं पूजा सत्यं सत्यं देवो निरञ्जनः।
गुरोर्वाक्यं सदा सत्यं सत्यं देव उमापतिः॥

ध्यान सत्य है,
पूजा सत्य है,
निरंजन परमात्मा सत्य हैं।
गुरु के शब्द सदा ही सत्य हैं
और उमापति शिव सत्य हैं।

गुरुपूर्णिमा के शुभ पर्व पर

शिष्यों द्वारा की गई श्रीगुरुपूजा

शिष्यों के जीवन में

कल्याणकारी दृश्य, विचार, शब्द और कर्म लेकर आए।

गुरुप्रसन्नता बनी रहे—

श्रीगुरु प्रसन्न हों।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥
ध्यान का मूल गुरुरूप है।
पूजा का मूल गुरुचरण हैं।
मन्त्र का मूल गुरुशब्द है।
मोक्ष का मूल गुरुकृपा है।

तस्मै श्री गुरवे नमः।
मैं श्रीगुरु को नमन करता हूँ।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।